THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

# उपचार : रोग की मृगतृष्णा के पार देखना
# Healing : Seeing through the mirage of disease

Author – David Shutler

Christian Science Sentinel November 10, 2014 Vol 116, Issue 45

जब मैं दस वर्ष का था, मेरा परिवार कैलिफोर्निया में डैथ वैली नैशनल पार्क में घूमने के लिए गया। प्रत्येक दिन जब हम रेगिस्तान से गुज़रते, मैं उन मृगतृष्णाओं पर अचम्भित होता जो मैं कार के सामने बाहर देखता था। मैं कभी भी समझ नहीं सका कि पानी को क्या हो जाता था जब हम मृगतृष्णाओं के ऊपर से चले जाते थे।

जब मैंने सबसे पहले सामने एक मृगतृष्णा को देखा, यह आँकने के लिए कि सड़क पर पानी कहाँ था मैंने एक सड़क चिन्ह को एक आँखों के संकेत की तरह प्रयोग किया, जब हम उस आँखों के संकेत से आगे निकल जाते, मैं पानी की तलाश करने लगता। परन्तु मुझे कभी भी पानी नहीं मिला।

इन दिनों मैं टैक्सॉस के राज्य में चर्च ऑफ क्राइस्ट, साँयटिस्ट की एक शाखा में संडे स्कूल पढ़ाता हूँ, जहाँ पर कैलिफोर्निया की डैथ वैली की तरह ही सड़कों पर मृगतृष्णाओं की कोई कमी नहीं है। संडे स्कूल में एक बार मैंने अपने दस वर्षीय विद्यार्थियों से सवाल पूछा जो कि मुझे अक्सर दुविधा में डाल देता था जब मैं उनकी उम्र का था : "पानी को क्या हो जाता है जब तुम एक मृगतृष्णा के ऊपर से गुज़रते हो?"

**नश्वर मानव तथा सारी बुराई अपने मूल स्वभाव में**
**केवल मत में ही विद्यमान होती है।**

शुरू में उन्होंने विश्वासपूर्ण तथा गलत उत्तर दिया : "पानी लुप्त हो जाता है!"

मैंने उन्हें इस सवाल पर दोबारा सोचने के लिए कहा, और तब उन्होंने थोड़े कम विश्वास के साथ उत्तर दिया था परन्तु सत्य को समझना शुरू कर दिया था : "हाय, एक मृगतृष्णा में पानी नहीं होता!"

मैंने उन्हें तीसरी बार पूछा, "तो पानी को क्या हो जाता है?"

इस बार उन्होंने बहुत खुशी से तथा सही जवाब दिया : "कुछ भी नहीं ! शुरू से ही पानी वहाँ कभी था ही नहीं।" मैंने जवाब को स्वीकृति दी तथा इसे अधिक बड़े आध्यात्मिक सबक में प्रयोग करना शुरू किया।

एक मृगतृष्णा को आसान तरीके से एक दृष्टि–प्रभाव की तरह वर्णित किया जा सकता है जो कि ताप तरंगो से उत्पन्न होता है – या एक शब्द में, एक भ्रम। क्या इसका अर्थ है एक मृगतृष्णा कल्पना की एक मनगढ़त बात है? जवाब है, नहीं। क्यों? एक आसान व्याख्या है कि किसी मृगतृष्णा की तस्वीर ली जा सकती है जैसी कि गूगल खोज प्रकट करेगी। यदि एक मृगतृष्णा मात्र कल्पना की एक मनगढ़ंत बात की तरह विद्यमान होती, इसकी कभी भी तस्वीर नहीं ली जा सकती थी। यह कुछ ऐसा है जो वास्तविक प्रतीत होता है, परन्तु केवल एक भ्रम है जो हमारे सामने प्रकट होता है।

*For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com*

Translation © 2015 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

इसे अध्यात्म में प्रयोग करते हुए, हम मेरी बेकर एडी के शब्दों की ओर रुख कर सकते हैं, जो क्रिश्चियन साँयस की खोजकर्त्री तथा संस्थापिका हैं। क्रिश्चियन साँयस पाठ्य पुस्तक, साँयस एण्ड हैल्थ विद् की टू द स्क्रिप्चर्स में वह लिखती हैं, ''मृगतृष्णा, जो पेड़ों तथा शहरों के होने का आभास करवाती है जहाँ वे नहीं होते, भौतिक मानव के भ्रम की व्याख्या करता है, जो कि **परमेश्वर***, का रूप नहीं हो सकता'' (पृष्ठ 300)। तथा और भी कहीं पर वह कहती हैं, ''हम बुराई को एक झूठ, एक भ्रम की तरह मानते हैं, इस प्रकार उतना ही अवास्तविक जितनी कि एक मृगतृष्णा जो कि एक घर जा रहे यात्री को उसके मार्ग से भटका देती है'' (मैसेज टू द मदर चर्च फॉर 1901, पृष्ठ 14)।

उनकी व्याख्याएँ संकेत करती हैं कि भौतिक मानव तथा सारी बुराई, मृगतृष्णाओं की तरह ही वे भी भ्रम ही हैं। उनके होने का आभास होता है, परन्तु वे होती नहीं, क्योंकि वे सच नहीं हैं–वे **परमेश्वर**, अच्छाई का रूप नहीं हैं, जिसने सब कुछ आध्यात्मिक रूप में रचा न कि भौतिक रूप में। नश्वर मानव तथा सारी बुराई अपने मूल स्वभाव में केवल मत में विद्यमान होती है। वे हमारी नज़रों के सामने स्वीकृति के लिए प्रकट होते हैं, परन्तु एक बार जब हम उनके भ्रमित स्वरूप से परे देखते हैं, उन्हें समर्पण करना होगा क्योंकि उनके पास वास्तविकता में, **परमेश्वर** की पूर्णतया अच्छी और आध्यात्मिक रचना में कोई स्थिरक नहीं होता।

अपनी संडे स्कूल कक्षा में, मैंने इस बड़े आध्यात्मिक सबक को उठाया, अपने विद्यार्थियों से यह पूछते हुए, ''जब आपका ज़ुकाम ठीक हो जाता है शारीरिक लक्षणों का क्या होता है?''

'उन्होंने उत्तर दिया, ''लक्षण लुप्त हो जाते हैं।'' मैंने उन्हें दोबारा सोचने के लिए कहा, और तब उन्होंने जवाब दिया : ''ओह, लक्षण वास्तविक नहीं होते, और ज़ुकाम वास्तविक नहीं होता।''

मैंने दोबारा पूछा, ''फिर लक्षणों को क्या होता है जब आपका उपचार होता है?''

उन्होंने कहा, ''कुछ नहीं'' ''क्योंकि लक्षण कभी भी वास्तविक नहीं थे, उसी तरह जैसे ज़ुकाम कभी भी वास्तविक नहीं था। उपचार हो जाता है जब आप भूल की शून्यता के पार देखते हो।''

मैंने जवाब दिया, ''बिल्कुल सही'', ''शून्य की शून्यता ही इसकी एकमात्र वास्तविकता है''

उन्होंने उपचार का एक बुनियादी तत्व खोज लिया था। श्रीमति एडी व्याख्या करती हैं, ''यदि एक साँयटिस्ट अपने मरीज़ के पास दिव्य **प्रेम** के साथ जाता है, उपचार कार्य एक ही मुलाकात में पूरा हो जाएगा, और रोग सुबह की धूप के सामने ओस के समान अपनी जन्मजात शून्यता में लुप्त हो जाएगा।'' (साँयस एण्ड हैल्थ पृष्ठ 365)

मेरे फौजी कैरियर की शुरूआत में, मुझे एक अनुभव मिला जिसने शून्य की शून्यता को प्रमाणित कर दिया। आप कह सकते थे कि इसने मृगतृष्णा–जैसे रोग के भ्रमित स्वरूप को प्रमाणित कर दिया, जो कि वास्तविक प्रकट होता था, परन्तु असलियत में झूठ था।

---

* मेरी बेकर एडी द्वारा लिखी पुस्तक "साँयस एण्ड हैल्थ विद् की टू दॅ स्क्रिपर्चस", वर्तमान में हिन्दी में उपलब्ध नहीं है, तथापि यह अंग्रेजी और सोलह अन्य भाषाओं में उपलब्ध है। साँयस एण्ड हैल्थ तथा अन्य क्रिश्चियन साँयस साहित्य विश्वव्यापी क्रिश्चियन साँयस रीडिंग रुमज़ से खरीदा जा सकता है या इस पते पर लिख कर :– **The Christian Science Publishing Society, P.O. Box 1875, Boston, MA-02117-1875 (U.S.A.)**

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

Translation © 2015 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

जब मैं अमरीकन वायु सेना में फर्स्ट लैफ्टिनैंट था, मैंने एक शिक्षा कार्यक्रम के लिए आवेदन दिया जिसमें वायु सेना, एक कानून के स्कूल में उपस्थित होने के लिए तीन वर्षीय छात्रवृति प्रदान करेगी। मैंने आवेदन पत्र पूरा किया और मुझे छात्रवृति मिल गई, परन्तु उसमें एक शर्त थी–एक शारीरिक परीक्षा में उतीर्ण होना।

शारीरिक परीक्षा के हिस्से के रूप में, मुझे हृदय की जाँच करवानी थी। बाद में, डॉक्टर ने कहा मेरे हृदय में असामान्य ध्वनि है। उन्होंने टिप्पणी दी कि हृदय की असामान्य ध्वनि मुझे कानून के स्कूल की छात्रवृति के लिए अयोग्य घोषित कर देगी, और दुर्भाग्यवश, यह मुझे भविष्य के लिए भी वायु–सेना की नौकरी से अयोग्य घोषित कर देगी।

मैं इस खबर से बहुत निराश हो गया। मैं हाई स्कूल से ही एक फौजी अधिकारी बनना चाहता था और मैंने फौजी वकील बनने के लिए अपना मन बना लिया था। मैंने डॉक्टर से पूछा क्या मैं हृदय की जाँच एक सप्ताह में दोबारा करवा सकता था, यह जानने के लिए कि क्या कोई सुधार हुआ। उन्होंने मेरा निवेदन स्वीकार कर लिया।

अब मेरे लिए आध्यात्मिक रूप से कार्य में जुट जाने का समय था, और यह प्रमाणित करने का जो मैं जानता था सच है। डॉक्टर के पास वह था जिसे उन्होंने प्रमाण माना था कि मेरे हृदय में एक असामान्य ध्वनि थीं फिर भी मैं जानता था कि यह एक अन्तर्निहित तथ्य नहीं था, अपितु भौतिक मत का एक भ्रम था। जिस प्रकार ताप तरंगे, दृष्टि संबंधी प्रभाव, या भ्रम उत्पन्न करती हैं, जिसे हम मृगतृष्णा कहते हैं, इन्सानी नश्वर मन, शरीर पर लक्षणों को चित्रित करता है जिन्हें हम बीमारी या रोग के रूप में मानते हैं। भ्रम केवल सोच में विद्यमान होता प्रतीत होता है।

**मैंने समझा कि मेरा आत्मत्व एक नश्वर शरीर में विद्यमान नहीं है और गलत भौतिक मतों से अछूता है, क्योंकि मैं आत्मा की अभिव्यक्ति हूँ।**

मैंने एक क्रिश्चियन साँयस प्रैक्टीशनर को फोन किया और उन्हें मेरे लिए प्रार्थना करने के लिए कहा, ताकि मैं इस तथ्य को महसूस कर सकूँ, समझ सकूँ, तथा प्रत्यक्षीकृत कर सकूँ कि मेरा जीवन, और मेरा अस्तित्व परमेश्वर की सम्पूर्णता की उत्पत्ति है, न कि भौतिक शरीर का प्रतिफल। प्रैक्टीशनर ने मेरी सोच को उपचारक स्वामी, क्राइस्ट जीसस की तरफ निर्देशित किया, जिन्होंने हमें सभी प्रकार की बीमारी तथा रोग का निदान दिया।

उन्होंने संकेत किया कि बाइबल में जीसस कहते हैं, ''कोई भी इन्सान शक्तिशाली इन्सान के घर में प्रवेश नहीं कर सकता, और न ही उसके सामान को बिगाड़ सकता है, जब तक कि वह पहले शक्तिशाली इन्सान को बाँध न ले; और तभी वह उसके घर को बिगाड़ सकेगा'' (मरकुस 3:27)। उन्होंने टिप्पणी दी कि ''शक्तिशाली इन्सान'' के बारे में जीसस ने ज़िक्र किया कि यह नश्वर मानव के लिए एक रूपक है, जैसा कि मेरी बेकर एडी ने साँयस एण्ड हैल्थ में व्याख्या की (देखें पृष्ठ 399–400)। शक्तिशाली इन्सान के ''सामान'' में बीमारियाँ शामिल हैं जो कि शरीर पर प्रकट होती दिखाई देती हैं।

नश्वर मन, नश्वर शरीर को नियन्त्रित करता दिखाई देता है, उसी तरह जैसे शक्तिशाली इन्सान उसके घर को नियन्त्रित करता दिखाई देता है। इसलिए हमें शक्तिशाली इन्सान (नश्वर मन) को उसका सामान बिगाड़ने तथा रोग से स्वस्थ होने के लिए बाँधने की आवश्यकता है। इस व्याख्या ने मुझ पर गहरा असर डाला।

जैसे मैंने प्रार्थना की, मैं इस तथ्य के साथ बना रहा कि मानव का आत्मत्व पूर्ण रूप से केवल आध्यात्मिक था तथा है, न कि भौतिक। यह वह तथ्य है जिसे जीसस ने प्रमाणित किया हर एक के लिए जिसे उन्होंने

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

स्वस्थ किया। मैंने समझा कि मेरा आत्मत्व एक नश्वर शरीर में विद्यमान नहीं है और गलत भौतिक मतों से अछूता है, क्योंकि मैं आत्मा की अभिव्यक्ति हूँ।

मैंने डॉक्टर की जाँच के द्वारा प्रस्तुत शून्यता से अपनी आज़ादी का दावा किया। मैंने स्पष्ट रूप से देखा कि जाँच केवल कुछ होने के बारे में थी जो प्रतीत हो रहा था परन्तु था नहीं। मैंने शून्यता के शून्य को थामे रखा, मृगतृष्णा के पार देखा, तथा अपनी आध्यात्मिक पहचान को, शाश्वत, अपरिवर्तनीय सत्य को पहचाना, सदा सर्वदा पूर्ण की तरह।

अगले सप्ताह, मैंने अगली जाँच करवाई और वह देख कर प्रफुल्लित हो गया जो मैं पहले से ही जानता था : कि मेरे हृदय में असामान्य ध्वनि नहीं थी। इस बार एक अन्य डॉक्टर ने मेरी जाँच की और उसने घोषित किया, ''तुम्हें कोई भी बीमारी नहीं है बेटा।'' उसने मुझे कानून के स्कूल की छात्रवृति के लिए योग्य घोषित कर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि वह पहले डॉक्टर की गलत जाँच के विरूद्ध शिकायत करना चाहते थे, परन्तु उन्होंने इस बात को छोड़ दिया जब मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि मैंने क्रिश्चियन साँयस का उपचार लिया था, जो कि काया पलट का कारण था।

मैंने कानून के स्कूल में पढ़ना उसी वर्ष पतझड़ में शुरू कर दिया तथा वायु सेना में एक फौजी वकील की तरह 25 साल तक के कैरियर का आनन्द उठाया। आप कल्पना कर सकते है कि मैं अभी भी परमेश्वर की देखरेख के इस उपचारक प्रमाण के लिए तथा मृगतृष्णा की परम शून्यता को देखने के लिए कितना आभारी हूँ।

Translation © 2015 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.